

Vol. 10 March '17 No. 8
Annual Subscription : Rs 100
Rs. 10/- per copy

ब्रह्मार्पण BRAHMARPAN

वेदो ऽखिलो
धर्ममूलम्

A Monthly publication of
Brahmasha India Vedic
Research Foundation



Brahmasha India Vedic Research Foundation
ब्रह्मशा इंडिया वैदिक रिसर्च फाउन्डेशन

‘नूतन जन्म’

—देवातिथि देवनारायण भारद्वाज

स्रोत-अस्मात् त्वमधिजातोऽसि, त्वदयं जायतां पुनः।

असौ स्वर्गाय लोकाय स्वाहा।।यजु.35.22।।

तुम यज्ञाग्नि प्रभु-मुस्कान हो।
नूतन जन्म दो यजमान को।।

गुमनाम को शुभ नाम देकर,
होते चिर अमर जग नेह में।

ये शुष्क समिधायें उठाकर।
ये यज्ञ वेदी पर सजाकर।
यजमान ही उत्पन्न करता,
यज्ञाग्नि-ज्वालायें जलाकर।

वह विश्व विश्रुत विद्वान हो।
नूतन जन्म दो यजमान को।।3।।
नाभि नभ से स्वाहा उचारी।
जग यज्ञ की आधार धारी।

याजक देह देवस्थान हो।
नूतन जन्म दो यजमान को।।।।।

यजमान को नव जन्म देती,
आमुख हृदय आभा उजारी।
भू पर स्वर्ग-सा सम्मान हो।

परिसुप्त दीपक हम जलाते।
तब दीप हमको जगमगाते
हम ही हृदय प्रभु ज्योति जनते,
तब पन्थ हमको प्रभु दिखाते।

नूतन जन्म दो यजमान को।।4।।
यजमान देता जन्म तुमको।

करते मूढ़ को द्युतिमान हो
नूतन जन्म दो यजमान को।।2।।

तुम जन्म दो यजमान जन को।
पशुता जले नव नरता खिले,
संकल्प दे शिव संगठन को।

ईश्वर जन्म देते देह में।
देते पितर अपने गेह में।

यह ऐश्वर्य का वरदान हो।
नूतन जन्म दो यजमान को।।5।।

‘वरेण्यम्’ अवन्तिका (प्रथम)

रामघाट मार्ग, अलीगढ़-उ.प्र.

BRAHMASHA INDIA VEDIC RESEARCH FOUNDATION ACKNOWLEDGES WITH THANKS RECEIPT OF THE FOLLOWING DONATION.

1. Shri H.D. Kalra C3/430 B, Janakpuri, New Delhi- 58 Rs. 500/-

Donations to the Foundation are eligible for Tax Exemption under Section 80G of the Income Tax Act 1960 Vide No.DIT(E)1/3313/DELBE 21670-2503210 dated 25.03.2010



**BRAHMASHA INDIA VEDIC
RESEARCH FOUNDATION**

C2A/58, Janakpuri,
New Delhi-110058

Tel :- 25525128, 9313749812
email:deekhal@yahoo.co.uk

brahmasha@gmail.com

Website : www.thearyasamaj.org
of Delhi Arya Pratinidhi Sabha

Sh. B.D. Ukhul

Secretary

Dr. B.B. Vidyalkar 0124-4948597
President

Col.(Dr.) Dalmir Singh (Retd.)

V.President

Dr. Mahendra Gupta V.President

Ms. Deepti Malhotra

Treasurer

Editorial Board

Dr. Bharat Bhushan Vidyalkar,
Editor

Dr. Harish Chandra

Dr. Mahendra Gupta

Acharya Gyaneshwararya

लेख में प्रकट किए विचारों के
लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं
हैं। किसी भी विवाद की
परिस्थिति में न्याय क्षेत्र दिल्ली
ही होगा।

Printed & Published by

B.D. Ukhul for Brahmasha India
Vedic Research Foundation

Under D.C.P.

License No. F2 (B-39) Press/
2007

R.N.I. Reg. No. DELBIL/ 2007/22062

Price : Rs. 10.00 per copy

Annual Subscription : Rs. 100.00

Brahmarpan March'17 Vol. 10 No.8

फाल्गुन-चैत्र 2073 वि.संवत्

**ब्रह्मार्पण
BRAHMAPAN**

A bilingual Publication of Brahmasha
India Vedic Research Foundation

CONTENTS

1. 'नूतन जन्म' 2
-देवातिथि देवनारायण भारद्वाज
2. संपादकीय 4
3. सांख्य दर्शन 8
-डॉ. भारत भूषण
4. लाला लाजपतराय का पत्र भाई
परमानन्द के नाम 9
-श्री दयाराम पोद्दार
5. भारतीय वाङ्मय में काल निर्णय 13
-काशीनाथ मिश्र
6. वेदों में विज्ञान के कुछ अद्भुत
कारनामे 21
-डॉ. रागनाथ वेदालंकार
7. युद्ध सिर्फ हथियारों से नहीं लड़े
जाते 29
-रंजीत कुमार
8. फागुन रंग झमकते हों तब देख
बहारें होली की 32
-राममोहक पाठक
9. Moksha Is To Priority 35
-Piya Mukherjee

संपादकीय

सैनिकों की समस्याएँ और उनका समाधान

भारतीय सेना के एक सैनिक ने सोशल मीडिया में शिकायत की कि ऊँची चोटियों, ठंडे व दुर्गम स्थलों पर तैनात सैनिकों को उनकी आवश्यकतानुसार न तो स्वादिष्ट खाना मिलता है और न ही इन स्थलों में उपयोग के लिए उपयुक्त गर्म कपड़े, शीतसह जूते व अन्य सैन्य सामान ही उपलब्ध होता है। सन् 1962 में चीन के साथ युद्ध में हमारे सैनिकों के पास आवश्यक वस्त्र, समुचित शस्त्रास्त्र और सैन्य सामग्री नहीं थी। इसलिए हमारे हजारों सैनिक युद्ध में मारे गए और कैद कर लिए गए अतः हमें पराजय का सामना करना पड़ा। यदि युद्ध की कठिन परिस्थितियों में सैनिक भूखे रहेंगे तो वे युद्ध क्या करेंगे?

सेना में अनुशासन का विशेष महत्त्व है। अनुशासन बनाए रखने के लिए उन्हें वैसा ही वातावरण भी मिलना चाहिए। उनके प्रति उच्च अधिकारियों का व्यवहार शालीनता का होना चाहिए। देखा गया है कि सैनिक अधिकारी जवानों के साथ गुलामों की तरह व्यवहार करते हैं। उनसे जूतों पर पौलिश करवाते हैं, उनके कुत्तों को घुमाने के लिए भेजते हैं, घर में सफाई करवाते हैं। इसके अतिरिक्त बच्चों को टहलाना और उनकी देखभाल करना आदि काम करने पड़ते हैं। यह हमें ब्रिटिश शासन से विरासत में मिला है।

सैनिकों के लिए जो राशन आदि खाने-पीने का सामान कैटीन से मिलता है उसे भी कुछ उच्च अधिकारी बेच

देते हैं। इसलिए उन्हें बचे-खुचे सामान से ही काम चलाना पड़ता है। यही कारण है कि उनका ऐसा रूखा-सूखा खाना, कैसे जायकेदार हो सकता है। एक सैनिक ने वीडियो पर अपने खाने में ऐसी दाल दिखाई है जिसमें पानी में नाम मात्र को दाल, हल्दी और नमक के साथ मिश्रित थी। ऐसे में सीमा पर या ऐसे दुर्गम स्थलों पर जहाँ उन्हें कड़ी मेहनत करनी पड़ती है वे देश की सुरक्षा के कठिन काम को कैसे अंजाम दे सकते हैं। हाल ही में सशस्त्र बलों से शिकायतों के वीडियो एक के बाद एक सामने आने से सुरक्षा एजेंसियाँ हैरान हैं। इनमें तीन वीडियो सैनिकों के भी हैं। आर्मी डिजाइन ब्यूरो द्वारा संकलित की गई। 119 पृष्ठों की रिपोर्ट में ऐसी 50 समस्याएँ गिनाई गई हैं जिन्हें तुरन्त दूर करने की आवश्यकता है।

नव नियुक्त आर्मी चीफ़ (सेनाध्यक्ष) ने सोशल मीडिया के माध्यम से अपनी शिकायतें सामने रखने वाले जवानों को सख्त चेतावनी दी है। उन्होंने कहा कि आपने जो अनुशासनहीनता का कार्य किया है उसके लिए आप दोषी ठहराए जा सकते हैं। आपको सजा हो सकती है। हाल ही में ऐसी शिकायतें सोशल मीडिया पर आई हैं जिनमें लांस नायक यज्ञ प्रताप सिंह ने आरोप लगाया कि सीनियर्स जवानों से कपड़े और जूते साफ कराते हैं। एक अन्य जवान नर्सिंग असिस्टेंट नायक राम भगत ने भेदभाव की शिकायत की है। एक सिख सैनिक गाकर दुखभरी दास्तान सुना रहा था कि जवान सरहद पर कितने मुश्किल हालात में ड्यूटी करते हैं। उनके खाने की गुणवत्ता की तुलना जरा शहरों में रहने वालों के खाने से करें। दूसरे, जवानों को महीनों तक छुट्टी नहीं

मिलती। वह कहता है “दस महीने हो गए, एक भी छुट्टी नहीं मिली, मेरे आँसू सूख चुके हैं, जिसकी मुझसे शादी हुई है, उसे यह तक अहसास नहीं कि वह शादीशुदा भी है या नहीं।

आर्मी चीफ़ जनरल रावत ने कहा यदि आपकी कोई समस्या है तो सोशल मीडिया में जाने के बजाय मौजूदा व्यवस्था का उपयोग करें। आप सीधे मुझसे भी मिल सकते हैं।

शिकायत निपटाने का नया सिस्टम-

सेना से जुड़े सरकारी सूत्रों के अनुसार हमने सोशल मीडिया पर आई शिकायतों पर ध्यान दिया और हम सैनिकों की भिन्न-भिन्न प्रकार की समस्याएँ सुलझाने के लिए एक नई व्यवस्था बनाने का प्रयत्न कर रहे हैं। सेना की हजारों यूनिटों में हर स्तर पर समस्या सुलझाना कठिन है। इसलिए हम नई व्यवस्था बनाने पर काम कर रहे हैं। सेनाध्यक्ष ने आश्वस्त किया है कि वे सैनिकों के लिए पौष्टिक और स्वादिष्ट भोजन की व्यवस्था तथा हर मौसम और क्षेत्र के लिए उपयुक्त कपड़े जूते, और युद्ध के लिए आधुनिकतम आयुधों की भी व्यवस्था कर रहे हैं। युद्ध में सैनिक की सबसे बड़ी आवश्यकता अपनी सुरक्षा की होती है। उनके सर्दी के कपड़े भी जहाँ ठंड से बचाव करें वही उनका वजन भी कम हो। शत्रु की बंदूकों की गोलियों से रक्षा के लिए अत्याधुनिक हल्की बुलेटप्रूफ जैकेट हो जो पूरे वक्षस्थल की रक्षा कर सके। इसके अतिरिक्त सिर के बचाव के लिए अच्छी गुणवत्ता वाला हेल्टमेट होना चाहिए।

भारतीय सैनिकों को विश्व के सबसे ऊँचें और सबसे ठंडे सियाचीन के युद्ध क्षेत्र में रहना पड़ सकता है। अभी

तक सेना सैनिकों के लिए शीत सह अच्छे कपड़े उपलब्ध नहीं करा सकी है। हाल ही में काश्मीर के पर्वतीय उच्च शिखरों पर बर्फीले तूफान में आवश्यक रक्षा उपकरणों और वस्त्रों के अभाव में 20 भारतीय सैनिक बर्फ में दब गए और उन्हें बचाया नहीं जा सका। हमारी सुरक्षा व्यवस्था में जो जवान हमारी सीमा की और देश भर में हमारी महत्वपूर्ण संरचनाओं (installations) की रक्षा करते हैं उनके प्रति हमारा रवैया बहुत अच्छा नहीं है। वे हमेशा अत्यधिक मानसिक दबाव में रहते हैं। हाल ही में बिहार में एक जवान ने अपने चार साथियों की गोली मार कर हत्या कर दी। इसका कारण उनकी मानसिक स्थिति है।

ये सैनिक कैसे अचानक अपने जीवनभर के अनुशासन को भूल जाते हैं। इसका मूल कारण सेना में वरिष्ठता और कनिष्ठता की भावना है जो औपनिवेशिक काल में चली आ रही है। आजादी के बाद भी सेना के जवानों के साथ अधिकारियों के व्यवहार में बहुत अन्तर नहीं आया है। परन्तु आज सैनिकों की दृष्टि में दुनिया का स्वरूप और उनकी अपेक्षाएँ बदल गई हैं।

सेना में वरिष्ठता और कनिष्ठता का होना आवश्यक है। परन्तु इसके साथ ही उन अफसरों की जिम्मेदारी बढ़ जाती है जिनके अधीन सैनिक काम करते हैं। सेना के अधिकारी जहाँ अपनी सुविधाओं का ध्यान रखते हैं वहीं अपने साथ कार्य करने वाले सैनिकों की सुविधाओं का भी ध्यान रखना चाहिए ताकि उन पर मानसिक दबाव न हो और वे युद्ध में अपनी पूरी क्षमता से योगदान कर सकें।

संपादक

सांख्य दर्शन (अध्याय-1, सूत्र-110)

-डॉ. भारत भूषण विद्यालंकार

आत्मा चेतन तत्त्व है, पर वह स्वतः सिद्ध तल ही अपितु वह जड़ की ही एक विकसित अवस्था है। जड़ परिणत होता हुआ जब ऐसी स्थिति में पहुँच जाता है, जहाँ उसमें कुछ विलक्षणता आ जाती है और सामान्य जड़ तत्त्व के समान उससे व्यवहार नहीं किया जा सकता; तब वही चेतन कह दिया जाता है। सूत्रकार अगले सूत्र में इसका समाधान करता है:-

जड़प्रकाशयोगात् प्रकाशः॥११०॥

अर्थ-(जड़) जड़ का (प्रकाश) चेतन रूप में (अयोगात्) परिणाम न होने से (प्रकाशः) चेतन (स्वतः सिद्ध) है। भावार्थ-जब वस्तु का प्रकाश के साथ, अथवा प्रकाश के रूप में योग न होने के कारण प्रकाश स्वतः सिद्ध माना जाना चाहिए। सूत्र में 'प्रकाश' शब्द चेतन के लिए प्रयुक्त हुआ है। 'योग' पद का अर्थ किसी रूप में पहुँचना या प्राप्त होना अर्थात् परिणाम होना है। कोई भी जड़ वस्तु चेतन रूप में परिणत नहीं होती इसलिए चेतन को स्वतः सिद्ध मानना चाहिए। जड़-चेतन की यह विशेषता है कि जड़ परिणामी और चेतन अपरिणामी होता है। अतः दोनों को एक नहीं माना जा सकता है। इस विषय का विस्तृत विवेचन "सांख्य सिद्धान्त" के 'पुरुष' नामक प्रकरण के प्रारम्भ में किया गया है॥११०॥

दी हिबिस्कस,

बिल्डिंग-5, एपार्ट नं.-9बी

सेक्टर-50, गुड़गाँव (हरियाणा) 122009

फोन-0124-4948597

लाला लाजपतराय का पत्र भाई परमानन्द के नाम

श्री दयाराम पोद्दार

[अट्टाईस जनवरी 1865 को जन्मे पंजाब केसरी लाला लाजपतराय ने स्वतंत्रता-संघर्ष में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। 30 अक्टूबर 1928 को साईमन कमीशन विरोधी प्रदर्शन में अंग्रेजी शासन की लाठियाँ खाकर उनकी हालत इतनी बिगड़ गई कि उन्हें अस्पताल में भर्ती कराना पड़ा जहाँ 17 नवम्बर 1928 को उनकी मृत्यु हो गई।

लाला लाजपतराय का भाई परमानन्द के साथ घनिष्ठ संबंध था। लाला जी उन्हें कभी-कभी लाहौर से लंदन पत्र लिखकर देश की राजनीतिक अवस्था से सूचित करते रहते थे। यहाँ प्रस्तुत है, उनका एक पत्र जो उन्होंने भाई परमानन्द को 27 फरवरी 1907 को लिखा था।]

लाहौर

28 फरवरी 1907

मेरे प्रिय भाई जी,

आपका पिछला पत्र मुझे समय पर मिल गया था। मुझे खेद है कि मैं इतने दिन आपको उत्तर न दे सका। मैंने आपका पत्र लाला हंसराज या किसी दूसरे को नहीं दिखलाया क्योंकि मैं यह निश्चित समझता हूँ कि आप डिग्री के बिना यहाँ न आएँ। यदि दयानन्द ऐंग्लो वैदिक कालेज की प्रबंध समिति आपको वहाँ रखने का दायित्व अपने ऊपर लेने से इन्कार कर दे तो यह दायित्व मैं अपने ऊपर ले लूँगा। सच बात तो यह है कि प्रबंध समिति के पास विदेश में शिक्षा संबंधी कोष इतना पर्याप्त है कि यदि आप वहाँ और छः मास रहना चाहें तो यहाँ से रुपया भेजा जा सकता है। आधा काम करने के पश्चात् आधा बीच में छोड़ने से क्या लाभ? मेरी धारणा है, डिग्री के बिना लौटना सामाजिक दृष्टि

से अपने आपको मूर्ख बनाना है। इस विषय में यह बात अंतिम समझिए।

जहाँ तक मेरा संबंध है, मैंने आर्यसमाज और दयानंद कालेज के प्रबंध में भाग लेना छोड़ दिया है। मैं ऐसी कोई बात सोच नहीं सकता जिससे लाला हंसराज के नेतृत्व को किसी प्रकार हानि पहुँचे। वही एक आदमी हैं जिन्हें मैं आर्यसमाज का नेता समझता हूँ तो भी मैं समझता हूँ कि मैं उनके साथ मिलकर काम नहीं कर सकता। मेरे अंदर यह विचार काम करता है कि लाला हंसराज ने मुझे साधन बनाया और अब मैं (बर्मा से) लौटा और लोगों ने मुझ पर आक्रमण किए तब लाला हंसराज ने मेरा साथ न दिया। वह समझते थे कि अब मैं कोई लाभदायक कार्य नहीं कर सकता। मैं गलत हो सकता हूँ और मैं चाहता हूँ कि मेरी वह धारणा निराधार हो। कभी-कभी तो मैं अपने आपसे घृणा करने लगता हूँ कि मैं इस प्रकार की बातें क्यों सोचने लगा हूँ और उदारतापूर्ण प्रवृत्ति स्वीकार करने का यत्न क्यों नहीं करता। जो भी हो, मैं संदेह और अविश्वास के भूत के सम्मुख अपने को असहाय पाता हूँ।

अपनी पुस्तकों तथा पत्रों के साथ मैं प्रायः अकेला ही रहता हूँ। लाला साईदास मुझे कभी-कभार ही मिलते हैं। मैंने भी लाला हंसराज और दूसरों को बहुत दिन से निमंत्रण नहीं दिया। हम एक दूसरे से बहुत कम मिलते हैं और मिलते हैं तो प्रायः औपचारिक रूप से। प्रबंध समिति के अधिकारियों के चुनाव के विषय में आपने पत्रों में पढ़ ही लिया होगा। दैनिक 'पंजाबी' के अभियोग के विषय में दिए गए निर्णय ने मेरी मुसीबत में वृद्धि कर दी है। विशाल दृष्टि से देखने पर मुझे प्रसन्नता होती है कि इसने आश्चर्यजनक कार्य किया है। इसने वह परिवर्तन ला दिया है जो हमारा दस बरस का प्रचार न ला सकता था परंतु जब मैं देखता हूँ कि बेचारे जसवंतराय

की मुसीबत के लिए लोग मुझे उत्तरदायी ठहराते हैं तब मुझे कभी-कभी दुःख होता है। इस कारण नहीं कि मैं दायित्व से बचना चाहता हूँ वरन् इसलिए कि जसवंतराय पर मुसीबत का पहाड़ टूट पड़ा है। (इस समय लाहौर के अंग्रेजी दैनिक के प्रबंध संचालक श्री जसवंतराय और संपादक श्री अठावले को कैद कर दिया गया था।) यहाँ यूरोपीय लोग बहुत घबराए हुए हैं। जिस दिन जसवंतराय को दंड सुनाया गया उस रोज लड़कों ने बहुत बुरा व्यवहार किया। कहा जाता है कि उन्होंने श्रीमती रेवाज की गाड़ी पर कीचड़ फेंका और उसे धिक्कार कर अपमानित किया। ऐसी और भी बातें हुई। जो भी हो, देखने में तो जसवंतराय दृढ़ प्रतीत होते हैं और हो सकता है कि लंबी कैद भुगत लें। यही हाल संपादक का है। परंतु इस दैनिक को जारी रखने की जिम्मेदारी मुझ पर आ पड़ेगी। फिर स्पेंसर की ओर से मानहानि के लिए दीवानी दावा दायर करने का डर है।

शायद यह बात पर्याप्त न थी, इस कारण मेरी कमर तोड़ने के लिए मेरे जंवाई डॉक्टर जयचंद मृत्यु के निकट पहुँच गए हैं। तो भी मुझे परमात्मा के विवेक तथा दयालुता में दृढ़ विश्वास है। वही परमात्मा हमारे भाग्य का निर्माण करते हैं। फिर उनके आदेश के अनुसार ही हमें काम करना चाहिए। मैं दिन-रात प्रार्थना करता हूँ कि दुर्भाग्यवश मेरे अंदर सत्य तथा राष्ट्रभक्ति का प्रकाश कम न हो। परमात्मा करे कि मेरे अंदर उनका दिया हुआ साहस और धैर्य विद्यमान रहे ताकि मैं अपने ध्येय के लिए डटा रहूँ और अपने कर्तव्य को वीरतापूर्वक निभा सकूँ। ऐसे ही समय में मनुष्य चाहता है कि उसके कार्य को नैतिक संबल प्रदान करने के लिए सच्चे और आजमूदा मित्र हो जो उसे प्रोत्साहन दें और उत्स्फूर्त करें। इस पतित समाज में ऐसे

मित्र पर्याप्त संख्या में नहीं मिलते।
रेलवे के लोगों ने मुझे लिखा है कि मैं रेलवे यूनियन का संविधान बनाऊँ। मैं आपका बहुत आभारी हूँगा यदि आप किसी रेलवे यूनियन की नियमावली भेज सकें। इसके अतिरिक्त मैं कृतज्ञ हूँगा यदि आप मुझे प्रति मास एक नई पुस्तक भेज सकें। यह क्रांतिकारी या राजनीतिक उपन्यास, किसी राजनीतिक आंदोलन का इतिहास या किसी राष्ट्रवादी का जीवन, आदि हो सकता है। श्यामजी (कृष्ण वर्मा) चाहें तो अपना थोड़ा-सा रुपया यहाँ के विद्यार्थियों के लिए ऐसी पुस्तकों पर खर्च कर सकते हैं जिनमें राजनीति के सत्य विचार हों। मुझे विश्वास है कि यदि लड़कों को अच्छे ढंग का साहित्य दिया जाए तो उससे ठोस परिणाम निकल सकते हैं। श्यामजी ने राजनीतिक मिशनरियों के लिए दस हजार रुपए दान दिया है। इस रुपये को वे कैसे खर्च करना चाहते हैं? क्या वे इस रुपये का एक भाग हमें दे सकते हैं? इनसे जरा पूछिए तो सही और फिर लिखिए। 'पंजाबी' के मुकदमे के संबंध में लंदन में रहने वाले भारतीयों की क्या भावना है? वहाँ के जन-मन पर इसका क्या प्रभाव पड़ा है? श्रीमान् और श्रीमती श्यामजी को मेरा स्मरण दिलाएँ परंतु यह पत्र सर्वथा गोपनीय है। किसी को दिखाइए नहीं। कृपा करके मुझे इंग्लैंड में रहने वाले भारतीयों के जीवन के विषय में कुछ और लिखिए।

आपका

लाजपतराय

जब लाला जी की गिरफ्तारी और जिलावतनी के समाचार लंदन पहुँचे तब परमानंद को स्वाभाविक रूप से बहुत क्लेश हुआ। इस सिलसिले में लंदन में कई सार्वजनिक सभाएँ की गईं जिनमें भाई परमानंद ने भी भाषण दिए।

राँची

भारतीय वाङ्मय में काल निर्णय

-काशीनाथ मिश्र

सभ्यता के उषा काल में मानव ने जब बदलते हुए भौगोलिक परिवर्तन, ऋतु परिवर्तन का निश्चित काल-चक्र और नभ मंडल में अनेकों प्रकार के ज्योतिपुंजों के सदा परिवर्तनशील किन्तु तारतम्ययुक्त आँख-मिचौली को देखा होगा तो अनायास ही उसके मानस पटल पर कौतूहलपूर्ण प्रश्न आया होगा कि यह परिवर्तन, यह रात-दिन, यह ऋतुचक्र, यह आकाशीय तारों की स्थिति में परिवर्तन, आखिर क्यों, कबसे और कैसे? मानव की अन्वेषण मनोवृत्ति ने भू-पटल पर संगठित या बिखरे हुए मानव को सोचने-समझने के लिए प्रेरित किया होगा और संभवतः अपनी असीमित विचार-शक्ति एवं अन्वेषक वृत्ति के माध्यम से उसने अपना अलग-अलग निष्कर्ष निकालने की कोशिश की होगी।

बाइबल में सृष्टि का रचनाकाल 4004 ईसा पूर्व रखा गया है तो कुछ पुस्तकों में पृथ्वी की सृष्टि को संपूर्ण ब्रह्माण्ड की सृष्टि से अलग और कुछ ने पृथ्वी की सृष्टि को ब्रह्माण्ड की सृष्टि का ही एक अंग माना है। हालांकि पृथ्वी या ब्रह्माण्ड की रचना एवं पृथ्वी पर प्राणियों/वनस्पतियों की रचना अलग-अलग घटना मानी जानी चाहिए।

हमारे अपने धार्मिक/पौराणिक ग्रंथों में सृष्टि के बारे में बहुत ही गहन चिंतन किया गया है और यह बड़े आश्चर्य की बात लगती है जब आज के वैज्ञानिक अपने आधुनिक संसाधनों एवं यंत्रों की मदद से पृथ्वी की करीब-करीब वही आयु (करीब 4.5 अरब वर्ष) बताते हैं जो हमारे प्राचीन भारतीय वाङ्मय में संकलित है। आज जब कि ब्रह्माण्ड की सृष्टि एवं इसकी संभाव्य आयु के बारे में अटकलें

लगाई जा रही हैं, हमारे ऋषियों-मुनियों ने (प्राचीन भारतीय वैज्ञानिकों ने) इसके आयु एवं इसके विनाश के विषय में एक निश्चित जानकारी दी है। जिसे कदाचित् ही काटा जा सके। हमारी काल गणना गणित आधारित रही है और इसका आधार भी त्रसरेणु (परमाणु) आधारित एवं वैज्ञानिक है। संवत्सर की अवधारणा की एक प्राचीन भारतीय परम्परा है जिसका युगों से प्रचलन जारी है। आइए देखें, ईसवी सन् 2016 की तुलना में हमारे मान्य सवन्सरों की क्या वर्ष संख्या है-

युगाब्द/कलियुग का आरंभ	0108 वर्ष
विक्रम संवत्	2073 वर्ष
शालिवाहन/शकाब्द	1938 वर्ष
बंगला संवत्	1023 वर्ष

भारत में काल गणना वस्तुतः बहुत ही पुरानी घटना है, किन्तु पुराणों एवं कतिपय ग्रन्थों को छोड़ इसका उल्लेख नहीं मिलता। कुछ प्राचीन भारतीय वैज्ञानिकों ने अपनी रचनाओं में ज्योतिष एवं कालनिर्णय से संबंधित जानकारी अवश्य दी हैं जैसे वाणभट्ट, वराहमिहिर, बोद्धायन, कात्यायन एवं महर्षि वेदव्यास ने कालगणना एवं कालनिर्णय के बारे में बहुत ही महत्त्वपूर्ण विवरण दिया है।

इसमें कोई संदेह नहीं कि प्राचीन सभ्यता की समकालीन अन्य भी प्राचीन सभ्यताएँ रही हैं जैसे मिश्र, मेसोपोटामिया, चीन, असीरिया आदि की सभ्यताएँ। आधुनिक वैज्ञानिकों का विश्वास है कि ईसा से 5000 वर्ष पूर्व सभ्यताओं का विकास हो गया था जिन में अंकों की प्रणाली तथा अयस्कों से धातु निकालने की प्रणाली विकसित हो गई थी। ईसा से तीन हजार वर्ष पूर्व भूमध्यसागर के तटवर्ती मिश्र देश में पाषाण निर्मित भव्य-भवनों एवं पिरामिडों के निर्माण की कला विकसित हो चुकी थी। हेग विश्वविद्यालय के प्रोफेसर

सेलेगेल के अनुसार ईसा से 15000 वर्ष पूर्व चीनवासियों ने राशिचक्र, ग्रहों एवं नक्षत्रों के बारे में अच्छी जानकारी प्राप्त की थी और करीब-करीब ईसा पूर्व 14,600 वर्ष पूर्व उन्होंने आकाशीय पिण्डों की गहन जानकारी रखना आरंभ कर दिया था। चाल्डिया एवं बेबिलोनिय भी अपनी प्राचीन सभ्यता के लिए विख्यात हैं। यूफ्रेटस और टाइग्रिस नदियों की घाटियों में बसे असीरियाई भी नक्षत्र विज्ञान एवं काल निर्णय की अच्छी जानकारी रखते थे। बेबिलोनियन पंचांग का प्रचलन करीब 4700 वर्ष ईसा पूर्व हो चुका था जिसमें उच्च गणनाओं का उपयोग किया गया था। सुमेरियन लोगों ने भी करीब 5700 ई.पू. या इससे पूर्व कदाचित् अपना संवत्सर मनाना शुरू कर दिया था। असूर में स्थित असुर लोगों ने भी अपने व्यवहार के लिए सुमेरियन पंचांग ईसापूर्व 3000 वर्ष लागू कर दिया था। मय सभ्यता भी एक प्राचीन सभ्यता है जहाँ ईसा पूर्व 3373 में वर्ष गणना प्रारंभ हो गई थी और उन्होंने अपना पंचांग ईसा पूर्व 4241 वर्ष में मिश्री पंचांग का प्रचलन हो गया था जिसमें वर्ष 12 महीने तथा प्रत्येक महीने में 30 दिन माने गए थे। वर्षान्त में 5 दिनों के लिए खुशियों का त्यौहार मनाया जाता था जिसे मिलाकर वर्ष के 365 दिन बनते थे जिनका मान आधुनिक काल में भी बरकरार है। इस प्रकार से हम देखते हैं कि पृथ्वी पर बहुत सी सभ्यताओं ने जन्म लिया और कालान्तर में काल के गाल में विलीन हो गई और रह गई हमारी प्राचीन गौरवमयी भारतीय सनातन परम्परा है न यह गौरव की बात। एक और आश्चर्य की बात, जब 14वीं शताब्दी से पूर्व यूरोप और दुनिया के अन्य देश मिलियन (दस लाख) से अधिक की संख्या नहीं जानते थे। हमारे भारत में हम संख्याओं की गणना तथा उनका उपयोग महाशंख तक करना जानते थे

तथा काल निर्णय में उनका भरपूर उपयोग किया था जैसा कि आप आगे देखेंगे।

भारतीय प्राचीन पुस्तक सूर्य सिद्धांत का रचना काल कहते हैं करीब 2,165,000 वर्ष तथा मनुसंहिता का रचना काल माना गया है 6×71×4,320,000 वर्ष। भले ही आधुनिक काल में कोई इनकी प्राचीनता का विश्वास करे या न करे। यह तो सत्य है कि पुस्तकें अत्यन्त प्राचीन एवं ज्ञान का भंडार हैं। यँ तो अनेक मनीषियों ने अपने ग्रंथों में काल से संबंधित अपने विचारों को उद्धृत किया है। यहाँ मैं वराहमिहिर द्वारा रचित वृहत् संहिता एवं महर्षि वेदव्यास द्वारा रचित श्रीमद् भागवत के आधार पर काल से संबंधित तथ्यों को दर्शा रहा हूँ जो भारतीय वाङ्मय के प्रतिनिधि ग्रन्थों के रूप में काल निर्णय के क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करते हैं।

वराहमिहिर द्वारा रचित वृहत्संहिता के सांवत्सरसूत्राध्याय नामक द्वितीय अध्याय में बहुत ही परिष्कृत रूप में काल खण्डों के सम्पूर्ण स्वरूप का वर्णन किया गया है। जैसे युग, वर्ष, अयन, ऋतु, मास, पक्ष, अहोरात्र, प्रहर, मुहूर्त, घटी, पल, प्राण और तूरि। वराहमिहिर ने संपूर्ण काल को महाप्रलय के पश्चात् चार युगों में बाँटा है। इन चार युगों का सम्मिलित मान तैंतालीस लाख बीस हजार वर्षों का है। इसका दसवाँ हिस्सा अर्थात् 4 लाख 32 हजार वर्ष का कलियुग का मान है। द्वापर युग का मान कलियुग का दोगुना अर्थात् 8 लाख 64 हजार वर्ष होता है। त्रेता युग का मान कलियुग के मान का तीन गुना अर्थात् 12 लाख 96 हजार वर्ष निकलता है। सतयुग का मान कलियुग के मान का 4 गुना होता है अर्थात् 17 लाख 28 हजार वर्ष।

वराहमिहिर ज्योतिष के प्रकांड पंडित थे। उनके अनुसार मेष राशि से आरंभ कर मीन राशि तक भ्रमण के दौरान सूर्य

जितना समय लेता है उसे सौर वर्ष कहते हैं। सौर वर्ष का मान 365 दिन और घड़ी से कुछ अधिक होता है। आज के इस वैज्ञानिक युग में भी सौर वर्ष का यही मान स्वीकृत है। आश्चर्य लगता है कि सैकड़ों वर्ष पूर्व जब कोई समय मापक यंत्र नहीं था, कोई अत्याधुनिक पारमाणविक घड़ी नहीं थी तब भी वराहमिहिर ने इतनी सटीक गणना कैसे की। वराहमिहिर ने छः ऋतुओं, ऋतु परिवर्तनों तथा चान्द्रमास के विषय में भी अच्छी जानकारी दी है। उनके अनुसार यदि सूर्य मकर से मिथुन तक रहता है तो उसे उत्तरायण एवं कर्क से धनु राशि तक रहता है तो उसे दक्षिणायन कहते हैं।

काल निर्णय के क्षेत्र में सबसे महत्त्वपूर्ण स्थान श्रीमद् भागवत् महापुराण को है। श्रीमद् भागवत के तृतीय स्कन्ध के ग्यारहवें अध्याय में कालनिर्णय में काल के सूक्ष्मातिसूक्ष्म स्वरूप का वर्णन किया गया है।

तो हम चर्चा कर रहे थे श्रीमद् भागवत पुराण में वर्णित काल की, जिसके अनुसार दो परमाणु मिलकर एक अणु का निर्माण करते हैं और तीन अणुओं को मिलने से एक त्रसरेणु बनता है। ऐसे तीन त्रसरेणुओं को पार करने में सूर्य की किरणों को जितना समय लगता है उसे त्रुटि कहते हैं। इसका सौ गुना काल वेध कहलाता है। तीन वेध का एकलव और तीन लव का एक निमेष तथा तीन निमेष को एक क्षण कहते हैं।

पाँच क्षण की एक काष्ठा होती है और पन्द्रह काष्ठा का लघु, पन्द्रह लघु की एक नाडिका होती है जिसे दण्ड कहा जाता है। दो दण्ड का एक मुहुर्त होता है। मनुष्य के दिन या रात के चौथे भाग को प्रहर दिन रात घटने-बढ़ने के अनुसार दोनों संधियों के दो मुहुर्तों को छोड़कर इस प्रकार

के चार-चार प्रहर। मनुष्यों के दिन और रात होते हैं। पन्द्रह दिन-रात का एक पक्ष होता है जो शुक्ल और कृष्ण भेद से दो प्रकार का माना गया है। इन पक्षों को मिलाकर एक मास होता है। दो मास की एक ऋतु और छः मास का एक अयन होता है। अयन के दो प्रकार हैं उत्तरायण और दक्षिणायन जो सूर्य के पृथ्वी के सापेक्ष भ्रमण के संक्रांति काल माने जाते हैं। इन दोनों अयनों को मिलाने से पृथ्वी लोक का एक वर्ष होता है। (अन्य-अन्य ग्रहों के वर्षों का मान अलग-अलग होता है)

इस सम्पूर्ण सृष्टिकाल अर्थात् कल्प को 14 भागों में विभक्त किया गया है जिसके प्रत्येक भाग के प्रथम पुरुष को मनु कहते हैं। ब्रह्मा का यह दिन समाप्त होते ही सारी सृष्टि ब्रह्मा में लीन हो जाती है। और प्रलय काल आ जाता है। ब्रह्मा जी की आयु सौ वर्ष की मानी गई है। ब्रह्मा की आयु के आधे भाग को परार्ध कहते हैं। अब तक पहला परार्ध बीत चुका है और दूसरा चल रहा है। अभी जो कल्प चल रहा है वह दूसरे परार्ध का आरंभिक कल्प है। इस प्रकार से सृष्टि और प्रलय काल का क्रम क्रमशः चलते रहता है अर्थात् ब्रह्मा का एक दिन और एक रात।

अब आइये प्राचीन भारतीय काल सूचक विभाजन तथा आज के आधुनिक काल में समय के मान का तारतम्य क्या है देखे :

2.5 विपल	-	1 सेकेन्ड
2.5 पल	-	1 मिनट
2.5 घड़ी	-	1 घंटा
60 घड़ी	-	24 घंटा या 1 अहोरात्रि
30 अहोरात्रि	-	1 महीना
12 अहोरात्रि	-	चन्द्रमास
360 अहोरात्रि	-	1 सावन वर्ष

361 महारात्रि	-	1 वृहस्पति वर्ष
365 अहोरात्रि	-	1 सौर वर्ष
1728000 सौर वर्ष	-	1 सतयुग की अवधि
1296000 सौर वर्ष	-	1 त्रेतायुग की अवधि
864000 सौर वर्ष	-	1 द्वापर युग की अवधि
432000 सौर वर्ष	-	कलियुग की अवधि
4320000 सौर वर्ष	-	महायुग
71,43 महायुग	-	1 मन्वन्तर
1000 महायुग	-	1 ब्रह्मदिन (कल्प); सृष्टिकाल-14 मन्वन्तर
1000 महायुग	-	1 ब्रह्मरात्रि-प्रलय काल
2000 महायुग	-	1 ब्रह्मअहोरात्रि (ब्रह्मा के एक दिन और एक रात का योगफल)

360 ब्रह्मअहोरात्रि - ब्रह्मवर्ष

100 ब्रह्मवर्ष अर्थात् सृष्टि की आयु

इस प्रकार भारतीय वाङ्मय के अनुसार सृष्टि की पूरी आयु
- 4320000000 वर्ष है। अब आइए देखते हैं कि इस
वाराहकल्प में सृष्टिकर्ता के एक दिन के कितने सौर वर्ष
बीत चुके हैं :

पहला परार्ध जो बीत चुका है - 2160000000 वर्ष

सतयुग - 1728000 वर्ष

त्रेतायुग - 1296000 वर्ष

द्वापरयुग - 864000 वर्ष

कलियुग - 5098 वर्ष

कुल - 2163893098 वर्ष

अर्थात् वर्तमान सृष्टि में से अब तक 2163893098 वर्ष बीत
चुके हैं और यह काल सृष्टि के आरंभ से अब तक का

बीत चुका काल है जिसमें पहले परार्ध के 2160000000 वर्ष एवं दूसरे परार्ध के 38933098 वर्ष बीत चुके हैं।

आज के युग में सबसे विश्वसनीय समय सूचक यंत्र परमाणु घड़ी है जिसमें समय की सत्यता पर अविश्वास नहीं किया जा सकता। क्या यह सचमुच बड़े आश्चर्य की बात नहीं है कि श्रीमद् भागवत पुराण में वर्णित समय की सूक्ष्मता ईकाई (वह काल समय जिसे सूर्य की किरणें तीन त्रसरेणुओं अर्थात् छः परमाणुओं को भेदकर पार कर जाती हैं।) एक परमाणु पर आधारित समय सूचक किसी संभावित यंत्र के आधार की ही सूचना देती है और यही कारण है कि आधुनिक गणक यंत्रों और सूत्रों के सहारे तरह-तरह के विश्लेषण कर पृथ्वी या ब्रह्माण्ड के निर्माण के संभावित काल का निर्णय भी करीब-करीब वही किया गया है जो हमारे वाङ्मय में हजारों वर्ष पहले अंकित किया जा चुका है। यह निर्विवाद सत्य है कि ईसा से हजारों वर्ष पूर्व भारत में ज्योतिष विज्ञान का समुचित विकास हो चुका था जिसकी झोंकी हमें रामायण या महाभारत में वर्णित प्रमुख घटनाओं को ग्रहण, ग्रहों एवं नक्षत्रों के अवस्थान के साथ दिग्दर्शित कराया गया है। बाइबिल में भी यह वर्णित है कि ईसा के जन्म के अवसर पर पूर्व से (भारत से) ज्योतिषियों की एक टोली बैथलहम गई थी किन्तु यह विचित्र विडंबना है कि हम पश्चिमी संस्कृति, सभ्यता, साहित्य एवं प्राचीन विज्ञान तथा इन पर आधारित मान्यताओं को तब तक स्वीकार नहीं करते जब तक कि उन पर विदेशी विशेषकर पश्चिमी विद्वानों की मुहर न लग जाए। भारतीय वाङ्मयों में वर्णित काल (समय) के बारे में उल्लिखित तथ्यों आदि पर भी यही बात लागू होती है। यही हमारी धारणा है, पता नहीं आप इससे कहाँ तक सहमत हैं।

बिलासपुर

वेदों में विज्ञान के कुछ अद्भुत कारनामे

-डॉ. रामनाथ वेदालंकार

विज्ञान मनुष्य के लिए एक स्वाभाविक आवश्यकता है। हम संघर्षण द्वारा अग्नि उत्पन्न करते हैं, कोयले पर रोटी को फुलाते हैं, बारूद से पर्वत खण्डों को तोड़ते हैं, नल द्वारा पानी को ऊँचाई पर ले जाते हैं, कूप से पानी खींचने के लिए चरखी का उपयोग करते हैं, सिंचाई के लिए ढेंकुली लगाते हैं, शीत में ऊनी वस्त्र पहनते हैं, पर्वत पर चढ़ते समय शरीर को झुका लेते हैं, इत्यादि हमारी छोटी-छोटी क्रियाओं में भी विज्ञान के नियम काम करते हैं, भले ही हमारा उनकी ओर ध्यान न जाता हो। मनुष्य विज्ञान के बिना पंगु है। विज्ञान द्वारा ही वह हिंस्र जन्तुओं और शत्रुओं से रक्षार्थ शस्त्रास्त्रों का निर्माण करता है, शीघ्रता से स्थानान्तर पर पहुँचने के लिए यानों को रचता है, रुग्ण होने पर स्वास्थ्य-लाभ के उपायों का आविष्कार करता है, विविध विद्याओं की उन्नति के लिए यन्त्र बनाता है, उपयोगी वस्तुओं को उत्पन्न करने के लिए कारखानों का निर्माण करता है। वेदों में जिस प्रकार धार्मिक, राजनीतिक आदि क्षेत्रों में उन्नति करने के लिए प्रेरणाएँ दी गयी हैं, उसी प्रकार वैज्ञानिक क्षेत्र में प्रगति के लिए भी वेद हमें प्रेरित करते हैं, यद्यपि इतना अवश्य है कि वेद की दृष्टि में विज्ञान का उपयोग जलकल्याण के लिए होना चाहिए। यहाँ हम वेदों में उल्लिखित कुछ वैज्ञानिक बातों की चर्चा करेंगे। व्योमयान-वेदों में व्योमयान में आकाश में उड़ने का उल्लेख कई स्थानों पर हुआ है। ऋग्वेद में एक ऐसे रथ का वर्णन किया गया है, जिसमें न घोड़ा है, न लगाम है, जो तीन पहियों से चलता है तथा आकाश में भ्रमण करता है-

अनश्वो जातो अनभीशुरुक्थ्यो रथस्त्रिचक्रः परिवर्तते रजः।
(ऋग्. 4/26/1)

एक अन्य स्थान पर सैनिकों को प्रेरणा दी गई है कि तुम ऐसे व्योमयानों पर बैठ कर पक्षियों के समान उड़ो, जो विद्युत् से चलाते हों, जिनके विशाल पंख हों तथा जिनमें शस्त्रास्त्र एवं आवश्यक खाद्य-सामग्री निहित हो-

आ विद्युन्मदिभर्मरुतः स्वकैरथेभियात ऋष्टिमदिभ्ररश्वपर्णेः।
आ वर्षिष्ठया न इषा क्यो न पप्तता सुमायाः॥ (ऋग्-
1/88/1)

ऋग्वेद के दशम मण्डल में कपोत नामक एक व्योमयान का वर्णन है, जैसे आज कल व्योमयानों के नाम राजहंस आदि रख दिए जाते हैं। दूसरे देश का दूत होकर एक कपोत किसी अन्य देश में पहुँचा है। उस देश के वासी उसका स्वागत करते हुए कहते हैं कि दूसरी भूमि का दूत जो यह कपोत हमसे कुछ चाहता हुआ हमारी भूमि में आया है, उसका हम सत्कार करते हैं:-
देवाः कपोत इषितो यदिच्छन् दूतो निर्ऋत्या इदमाजगाम।
तस्या आर्चाम कृणवाम निष्कृमि शं नो अस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे। ऋग्.10/165/1)

यह ठीक वैसा ही प्रसंग है, जैसे हमारे पड़ोसी देश पाकिस्तान का कोई यान (यानारोही दल) किन्हीं समस्याओं पर वार्तालाप करने के लिए हमारे देश में आये। जैसे इस मन्त्र में पक्षिविशेष कबूतर-वाची कपोत शब्द विमान के लिए प्रयुक्त किया है, वैसे ही अन्यत्र पक्षिसमान्य-वाची 'वि' शब्द आता है।
वेदा यो वीनां पदमन्तरिक्षेण पतलाम्।

वेद नावः समुद्रियः॥ ऋग्.1/25/7

यहाँ वरुण की स्तुति में कहा गया है कि वह आकाश में उड़ने वाले विमानों तथा समुद्र में चलने वाली नौकाओं को जानता है। नौकाओं की तुलना में पक्षिवाची 'वि' शब्द का विमान अर्थ करने में ही अधिक औचित्य है।

जलयान-जलयान के प्रयोग का उपदेश देने के लिए वेद में 'अश्विनौ' द्वारा व्यापारी भुज्यु को समुद्र पार ले जाने का एक काल्पनिक कथानक मिलता है। तुग्र-एक राजा है, वह-अपने देश के व्यापारी भुज्यु तथा उसके साथियों को जलपोतों द्वारा देशांतर में भेजता है। पोतचालक अश्वी निरन्तर तीन दिनरात जलयात्रा कराते हुए उन्हें सुरक्षित पार पहुँचा देते हैं-

तुग्रो ह भुज्युमश्विनोदमेघे रयि न कश्चिन्ममूवाँ अवाहाः।

तमूहथुनौभिरात्मन्वतीभिः अन्तरक्षिप्रुदिभ्ररपोदकाभिः॥

तिस्रः क्षपस्त्रिरहातिब्रजदिभः नासत्या भुज्युमूहथुः पतङ्गः।

समुद्रस्य धन्वन्नार्द्रं स्य पारे त्रिभी रथैः शतपदिभः षडश्वैः॥

ऋग्. 1/116/3/4

यहाँ नौकाओं या जलपोतों की विशेषता बताने वाले उनके कुछ विशेषण प्रयुक्त हैं। 'अन्तरिक्षप्रुद्' से सूचित होता है कि वे जलपोत बिना डूबे पानी के ऊपर-ऊपर चलते हैं। 'अपोदक' से आशय है कि उन पर पानी का प्रभाव नहीं होता, अर्थात् वे 'वाटरप्रूफ' है। वे पतंग हैं, अर्थात् वेग के कारण ऐसा प्रतीत होता है कि वे पानी के ऊपर बढ़े चले जा रहे हैं। वे शतपद् भी हैं, क्योंकि उनमें चलाने-रोकने आदि के लिए अनेक कलें लगी हुई हैं। छः इंजनों वाले होने के कारण वे षडश्व हैं। इस प्रसंग में आये तुग्र, भुज्यु एवं अश्विनी शब्द भी यौगिक हैं। राजा के अर्थ में आया तुम शब्द 'तुकि हिंसाबलादाननिकेतनेषु' धातु से औणादिक रक् प्रत्यय लगने पर निष्पन्न होता है। इससे राजा का शत्रुहिंसक, बसी, संग्रहशील अनि होना सूचित होता है। 'भुज्यु' का अर्थ है भोग्य पदार्थों की इच्छा करने वाला, यहाँ इच्छा अर्थ में क्यच् प्रत्यय है। अश्विनी का अर्थ है अश्वों वाले या गति वाले अर्थात् चालक।

एक अन्य मन्त्र में ऐसे यान का उल्लेख है जो पनडुब्बी की तरह समुद्र के अन्दर भी चल सकता है, तथा आवश्यकतानुसार पक्षी के समान आकाश में भी उड़ सकता है। इसे भी अश्विनी ने तुग्र के पुत्र भुज्यु के उपयोग के लिए रचा है।

युवमेतं चक्रथुः सिन्धुषु प्लवम्

आत्मन्वन्तं पक्षिणं तौऽग्रा कम्॥ ऋग्.1/182/5

जज के घटक तत्त्व-आधुनिक विज्ञानवेत्ता प्रयोगशाला में परीक्षण करके दिखाते हैं कि जलघटक तत्त्व ऑक्सीजन तथा हाइड्रोजन नामक दो गैसों हैं। उनमें विद्युतधारा प्रवाहित करने से जल उत्पन्न हो जाता है तथा विद्युत द्वारा जल को फाड़ने पर वह उक्त गैसों में विभक्त हो जाता है। यह रहस्य निम्न वेदमन्त्र में वर्णित है-

मित्रं हुवे पूतदक्षं वरुणं च रिशादसम्।

धियं घृताचीं साधन्ता॥ ऋग्.1/2/7

इसमें युक्त दो गैसों को क्रमशः मित्र और वरुण नाम दिया

है। जल के लिए घृत शब्द प्रयुक्त हुआ है-घृतमित्युदकनाम जिघर्तेः सिञ्चति कर्मणः, निरुक्त 7/24। अथर्ववेद में एक स्थान पर वर्षा को मित्र एवं वरुण से मिलकर बना हुआ कहा गया है- न वर्षः मैत्रावरुणं ब्रह्मज्यमभिवर्षति, अथर्व.5/19/24। ऋग्वेद के एक मन्त्र में वसिष्ठ को मित्र एवं वरुण से उत्पन्न तथा उर्वशी के मन से अभिजात कहा है। यहाँ भी वसिष्ठ से वर्षा की बूँद अभिप्रेत है, और मित्र-वरुण उक्त दो वायुएँ तथा उर्वशी विद्युत है।

उतासि मैत्रावरुणो वसिष्ठ

उर्वश्या ब्रह्मन् मनसाऽधिजातः॥ ऋग्.7/33/11

वर्षा कराना-कभी-कभी वर्षा की महती आवश्यकता होने पर भी वर्षा नहीं होती, या तो बादल आ-आकर चले जाते हैं, या आते ही नहीं। ऐसी अवस्था में वर्षा कराने के उपायों का आविष्कार करने में वर्तमान विज्ञान संलग्न है। वैज्ञानिक ऐसे परीक्षण कर रहे हैं कि विमान द्वारा ऊपर पहुँचकर आकाश में कुछ पदार्थ छिड़काने से बादलों को बरसाया जा सके। अभी यह कार्य असम्भव तो नहीं, किन्तु अतिव्ययसाध्य समझा जा रहा है। परन्तु वेद में मन्त्र द्वारा कृत्रिमरूप से वर्षा कराने का स्पष्ट उल्लेख मिलता है। ऋग्वेद के वृष्टिकाम सूक्त में देवापि आर्षिषेणा यज्ञ के वैज्ञानिक प्रयोग द्वारा उत्तर समुद्र (आकाश) से अधर समुद्र की ओर जल बरसाने से सफल होता है-

आर्षिषेणो होत्रमृषिर्निषीदन् देवापि देवसुमति चिकित्वान् स उत्तरस्मादधरं समुद्रमयो दिव्या असृजद् वर्ष्या अभि॥

ऋग्. 10/98/5

अगले मंत्र में स्पष्ट कहा है कि आकाश में जल देवों द्वारा रुके हुए स्थित हैं, अर्थात् ऐसी परिस्थिति है कि बादल छाये हुए हैं किन्तु वृष्टि नहीं होती तब देवादि अपनी कला से उन्हें बरसा देता है। इस सूक्त के अन्तिम मन्त्र में अग्नि को सम्बोधन कर कहा है कि प्रचुर जलों को बरसा दो। आज भले ही इस विज्ञान से हम पूर्णतः परिचित न हों पर वेद से प्रेरणा लेकर हम इस दिशा में प्रगति कर प्रकृति पर विजय पा सकते

हैं।

कृत्रिम टाँग लगाना-रणभूमि में रात्रि में युद्ध करते-करते खेल योद्धा की पत्नी विशपला की टाँग कट कर गिर पड़ती है, जैसे पक्षी का पंख टूट कर गिर जाता है। खेल में ऐसा वीर जो संग्राम को क्रीड़ा समझता है। विशपला का अर्थ है प्रजा का पालन करने में समर्थ वीरांगना। अश्विनी नामक चिकित्सक उसकी टूटी टाँग के स्थान पर नई आयसी जंघा लगा देते हैं, जिससे वह आसानी से चल-फिर सकता है-
चरित्रं हि वेरिवाच्छेदि पर्णमाजा लेखस्य परितक्म्यायाम्।
सद्यो जङ्घामायसीं विशपलायै धने हिते सतवे प्रत्यत्तम्॥

ऋग्. 1/116/16

वृद्ध को तरुण बनाना-आजकल कुछ वैज्ञानिक ऐसी औषधि के आविष्कार में लगे हैं, जिससे वृद्ध को तरुण बनाया जा सके। वेद में इस विद्या का भी वर्णन मिलता है। अश्वी वैद्य एक जीर्ण शरीर वाले च्यवन को अपनी संजीवनी क्रियाओं से पुनः युवा कर देते हैं-

युवं च्यवानमश्विना जरन्तं

पुनर्युवानं चक्रथुः शचीभिः॥ ऋग्. 1/117/13

ऋभुओं के सम्बन्ध में भी वेद ऐसी ही चर्चा करता है। वे वृद्ध माता-पिता को पुनः बना देते हैं।

पुरुष संतान उत्पन्न करना-जिन स्त्रियों के कन्याएँ ही उत्पन्न होती हैं, उनके लिए पुत्रोत्पत्ति का वेद में यह उपाय बताया गया है कि शमी-वृक्ष के ऊपर उगे हुए अश्वत्थ (पीपल) का वे सेवन करें। अब यह सेवन किस प्रकार, किस रूप में, किस समय किया जाये इसका अनुसन्धान करना भिषगाचार्यों का कार्य है।

शमीमश्वत्थ आरूढस्तत्र पुंसवनं कृतम्।

तद् वै पुत्रस्य वेदनं तत् स्त्रीष्वाभरामसि॥ अथर्व.6/11/1

बूढ़ी बन्ध्या गाय को दुधारू करना-चिकित्सक 'आश्विनै-युगल' शयु ऋषि की बूढ़ी गाय को, जिसने दूध देना बन्द कर दिया था, फिर से दुधारू बना देते हैं-

अधेनुं: दस्त्रा स्तर्यं विषक्ताम्।

अपिज्वतं शयवे अश्विना गाम्॥ ऋग्.1/117/20

ऋगु देवों में भी यह कौशल है कि वे चर्मावशेष गाय को हृदयपुत्र गाय में परिणत करके उसे बछड़े से संयुक्त कर देते हैं-
निश्चर्मण ऋमर्वा गामपिंशत सं वत्सेनासृजन्ता मातरं पुनः॥

ऋग. 1/110/8

सौर ऊर्जा से यान एवं यन्त्र चलाना-सौर ऊर्जा द्वारा विमानादि रथों एवं यन्त्रकलाओं को चलाये जाने का वर्णन भी वेदों में अनेक स्थलों में आता है, जिसमें पर्यावरण प्रदूषण की वर्तमान समस्या का समाधान निहित है।

अस्माकमूर्जा रथं अविषु माहिनः।

भुवद् वाजानां वृध इमं नः शृणवद्भवम्॥ ऋ10/26/9

अपनी सशक्त ऊर्जा द्वारा महस् पूषा सूर्य हमारे रथादि यानों पर प्रवेश करें। वह बल-वेशों का बढ़ाने वाला हो और ध्वनियन्त्र में प्रयुक्त होकर हमारे बोले गये शब्दों को सुनाने वाला भी हो (शृणवद् श्रावयद्, लुप्रणिच्छ प्रयोग)

युजानो हरिता रथे भूरि त्वष्टेह राजति। ऋग्.6/47

त्वष्टा सूर्य अपनी किरणों से उत्पन्न विद्युतों को भूतान, जलयान एवं विमानों में युक्त करता हुआ भूरि-भूरि चमक रहा है या यशस्वी हो रहा है।

इन्द्रो मायाभिः पुरुरूप ईयते

युक्ता ह्यस्य हरयः शता दश॥ऋग्.6/47

अनेक रूपों वाला सूर्य अपनी ऊर्जाओं साथ गति कर रहा है। इसकी हजार किरणें यन्त्रकलाओं में तथा विमानादि यानों में युक्त होती है। मनुष्य के धड़ पर घोड़े के सिर पर प्रत्यारोपण

ऋग्वेद प्रथम मण्डल के 116 वें सूक्त के एक मन्त्र पर सायणाचार्य ने पूर्वप्रचलित एक आद्व्यादिका दी है। इन्दु ने दध्यङ् ऋषि को प्रवर्ग्यविद्या और मधुविद्या का उपदेश देकर यह चेतावनी दी कि यदि तुम यह विद्या किसी अन्य को बताओगे तो तुम्हारा सिर काट दूँगा। अश्विचन् देव दध्यङ् से वह विद्या सीखना चाहते थे। वे उत्कृष्ट कोटि के शल्यचिकित्सक (सर्जन) थे। अतः उन्होंने दध्यङ् ऋषि का असली सिर काट कर अलग सुरक्षित रख दिया और उसके बदले घोड़े का सिर लगा दिया। उसी घोड़े के सिर से दध्यङ् ने अश्विवनों को वह

विद्या बता दी। तब इन्द्र ने अपनी शर्त के अनुसार दध्यङ् का घोड़े वाला सिर काट दिया। कथा की विस्तृत व्याख्या करने का यहाँ अवकाश नहीं है। ऋग्वेद में वर्णित शल्यक्रिया द्वारा प्रत्यारोपित कर दिया। ऋग्वेद में वर्णित शल्यक्रिया विज्ञान कितना अभूत है, यही दिखाना यहाँ प्रयोजन है। मन्त्र में भी देखिए-

तद्वां नरा सनये दंस उग्रमाविष्कृणोमि तन्यतुर्न वृष्टिम्॥
दध्यङ् यन्मध्वार्थवर्णो वामश्वस्य शीर्ष्णा प्र यदीमुवाच॥
ऋग. 1/116/12

अर्थात् हे शल्यक्रिया के विशेषज्ञ नेता अश्विनो, मैं तुम्हारी एक करामात को प्रकट करने लगा हूँ, जैसे बिजली दृष्टि को प्रकट करती है। वह करामात यह है कि तुमने आथर्वण दध्यङ् ऋषि के कन्धों पर घोड़े का सिर लगा दिया था, जिसे सिर से उसने तुम्हें मधु विद्या कही थी।

तीन टुकड़ों में खण्डित शरीर को पुनः जोड़ना ऋषि पूर्ण स्वस्थ है, खूब चलता-फिरता, दौड़ता भागता है (श्येडू गतौ) प्रभु उसके शरीर के तीन टुकड़े कर देते हैं। राजकीय शल्यचिकित्सक (देव्या भिषजौ) अश्विन-युगल तीन टुकड़ों में विभक्त उसके शरीर को सीकर पुनः चलने-फिरने योग्य बना देते हैं।

त्रिधा ह श्यावमश्विना विकस्तमुज्जीवस ऐरयतं सुदान। ऋग.
1/117/24

आग-भरे बम के गोले

स्वयं युद्ध की विभीषिका उत्पन्न करने के लिए नहीं, किन्तु शत्रु यदि युद्ध पर उतारू होता है तो शान्ति-रक्षार्थ वेद मारक शास्त्रास्त्र बनाने की प्रेरणा करता है।

इन्द्रासोमा वर्तयतं दिवस्पतिरि अग्नितहोभिर्युवमश्महन्यभिः ऋग.
7/104/5

इन्द्र और सोम को सम्बोधन किया गया है। इन्द्र है वीर और सोम है शान्ति का उपासक। "हे इन्द्र और सोम, तुम आग भरे बम के गोलों द्वारा आकाश में प्रहार करो।" यहाँ बम के गोले के लिए 'अश्महनमम्' का प्रयोग है और उसका विशेषण है 'अग्नितहा' अर्थात् आग से तपा हुआ जिसमें अग्निताय की

विस्फोटक सामग्री का वर्णन है, जो आकाश से, पृथिवी से और पर्वतों से छोड़े जा सकते हैं।

इन्द्रासोमा वर्तयतं दिवो वधं, सं पृथिव्या अधशंसाय तर्हणम्।
उत् तक्षतं स्वयं पर्वतेभ्यो, ये रक्षो वाश्धानं विनूर्वथं
निनूर्वथः ॥ ऋग. 104/4

अर्थात् हे इन्द्र और सोम तुम आकाश से बध करने वाला बम छोड़ो, पापप्रशंसक शत्रु पर पृथिवी से पृथिवी पर मार करने वाली मिसाइलें छोड़ो, पर्वतों से शब्दकारी और तापकारी गोले बरसाओ, जिनसे तुम बढ़ते हुए राक्षस को नष्ट कर सकते हो। वेदों में अन्धा आग्नेशास्त्र, वायव्यास्त्र, पर्जन्यास्त्र, आदि का भी वर्णन मिलता है। ऋग्वेद में एक स्थल पर वैज्ञानिक कारीगर से बनाये हुए बिजली से चलने वाले लोहे के बम (आयस अश्मा) की चर्चा भी आती है-

त्वमायसं प्रति वर्तयो गो दिवो अश्मानमुषनीतमृभ्वा। ऋग.
1/121/9

इस प्रकार वेदों में प्रतिपादित कुछ वैज्ञानिक विषयों की चर्चा इस संक्षिप्त लेख में की गई है। अन्य भी अनेक विज्ञान-सम्बन्धी बातों का मूलरूप से वर्णन वेदों में उपलब्ध होता है। उनसे प्रेरणा पाकर हम इस दिशा में अग्रसर हो सकते हैं। एक शंका यह की जाती है कि यदि वेद में व्योमयान आदि के निर्माण की विधि नहीं लिखी है तो वेदों के ये वर्णन हमारे लिए निरर्थक हैं, हम इनका क्या करें। परन्तु वेद तो वस्तुतः प्रेरणा के स्रोत हैं। हमें क्या-क्या करना चाहिए किस-किस दिशा में प्रगति करनी चाहिए। यह प्रेरणा वेद से प्राप्त होती है, उसे हम किस प्रकार करें यह हमें अपनी बुद्धि से समझना है। आज भी जिन्होंने वैज्ञानिक वस्तुओं का आविष्कार किया है, वह क्या कहीं अक्षरशः लिखा हुआ पढ़ कर किया है? जैसे उन्होंने किया वैसे हम भी कर सकते हैं, प्रेरणा हम वेद से ले सकते हैं।



युद्ध सिर्फ हथियारों से नहीं लड़े जाते
सेना के कई आला अफसरों का भ्रष्ट आचरण
सैनिकों का मनोबल तोड़ने वाला साबित होता है

-रंजीत कुमार

पिछला दशक थलसेना के लिए घोटालों का समय रहा है जिससे उसकी छवि काफी धूमिल हुई है। व्यापक स्तर पर सेना में भ्रष्टाचार की वारदातें उजागर होने से यह आम आदमी के मन में यह सवाल खड़ा हो गया है कि भ्रष्ट अधिकारियों से भरी सेना किस तरह देश के सुरक्षा हितों की रक्षा कर पाएगी। सेनाओं के सामने हमारे पड़ोसी देशों में आई सुरक्षा चुनौती आने वाले सालों में और बढ़ेगी लेकिन भ्रष्टाचार से निबटना सेना मुख्यालय के लिए उससे भी बड़ी चुनौती बनेगा। भ्रष्टाचार की रिपोर्टों से सैनिकों का मनोबल जिस तरह गिरा है, उसकी भरपाई बड़े-बड़े टैंक, लड़ाकू विमान और युद्धपोत भी नहीं कर पाएँगे। सेनाएँ केवल आधुनिक हथियारों से ही मजबूत नहीं होतीं। उनकी युद्ध क्षमता सबसे ज्यादा उनकी नैतिक ताकत और मनोबल पर निर्भर करती है।

खाता बढ़ाने की सोच

हाल के दशकों तक सेना में युवक राष्ट्र की सेवा और सुरक्षा की भावना से ओतप्रोत होकर भर्ती होते थे। राजस्थान में 50 डिग्री पर तपता हुआ रेगिस्तान हो, सियाचीन की शून्य से 50 डिग्री नीचे का ठंड, या उत्तर-पूर्व के चीन से लगे दुर्गम पर्वतीय जंगली सीमांत इलाके, इन सभी जगहों पर महीनों अपने परिवार से दूर रहना वे अपने लिए गौरव की बात मानते थे। आज भी सेना के जवान और अधिकारी इन इलाकों में तैनात हैं और देश की एक-एक इंच जमीन की रक्षा के लिए वे अपनी जान न्यौछावर करने को तैयार रहते

हैं। लेकिन जम्मू-काश्मीर या उत्तर पूर्व में आतंकवादियों और अलगाववादियों से लड़ने के लिए निकले युवा सैनिक जब देखेंगे कि उनके आला अफसर उनकी कुर्बानी की बदौलत अपने ऐशोआराम के लिए अपनी संपत्ति और बैंक खाते बढ़ाने में लगे हैं तो उन पर इसका क्या असर पड़ेगा? अपनी जान वे क्यों जोखिम में डालेंगे जब उन्हें पता होगा कि उनकी कुर्बानी भुनाने को कोई और तैयार बैठा है? बांग्लादेश सीमा पर जवानों द्वारा घुसपैठ और तस्करी की छूट दिए जाने की बात सबको पता है लेकिन हमारे अधिकारी इस पर ध्यान क्यों नहीं देते?

क्या इसलिए कि वे खुद भी ऐसे भ्रष्ट गतिविधियों से लिप्त हैं? निश्चय ही भ्रष्टाचार केवल सुरक्षा बलों के महकमों तक सीमित नहीं रह गया है। कुछ दशक पहले तक अपवाद के तौर पर इक्का-दुक्का अनैतिक हरकतों की बात उजागर होती थी, लेकिन अब सेना में ऐसे मामले नागरिक विभागों की ही तरह रूटीन ढंग से उजागर हो रहे हैं। रिटायर हो चुके कई आला सैनिक अधिकारी कहते हैं कि आज के सैनिक अधिकारियों की सोच और काम में भारी फर्क इसलिए आने लगा है कि वे अपने समाज और विभिन्न सरकारी महकमों में चारों तरफ भ्रष्टाचार का ही माहौल देख रहे हैं। इससे अछूता रहने के लिए जरूरी है कि जो आला सैन्य अधिकारी शीर्ष पदों पर विराजमान हैं वे अपने युवा अधिकारियों के बीच देश की सेवा करने की प्रेरणा के स्रोत बने। लेकिन सेनाओं में शीर्ष पदों पर पहुँचने के लिए जिस तरह से राजनीतिक हस्तक्षेप होने लगा है और जिस आधार पर अधिकारियों के तबादले और पदोन्नति होने लगी हैं, वह युवा अधिकारियों को हतोत्साहित करने के लिए पर्याप्त है। सेनाओं में आला अधिकारियों के भ्रष्टाचार में लिप्त पाए

जाने से यह बात भी उजागर होती है कि इन रणनीतिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण पदों पर अब ऐसे लोगों का चयन हो रहा है जो नैतिकता के पैमाने पर खरे नहीं उतरते। सेनाओं में अनुशासन के लिए वरिष्ठ अधिकारियों के आदेशों और निर्देशों का पालन करना जरूरी होता है। लेकिन अनुशासन के नाम पर व्यक्तिगत वजहों से जब किसी जूनियर अधिकारी को परेशान किया जाए और किसी को बेहतर पोस्टिंग दे दी जाए तो इससे भी सेना में अधिकारियों और जवानों का मनोबल गिरता है। कभी-कभी तो ऐसे मामले सामने आए हैं कि सीनियर अधिकारी ने अपने जूनियर अधिकारी की पत्नी पर बुरी निगाह डाली है और विरोध करने पर उस अधिकारी को बुरे दिन देखने पड़े हैं। सेना के आला अधिकारियों के वित्तीय भ्रष्टाचार में लिप्त पाए जाने के अलावा उनके चारित्रिक पतन के भी कई मामले उजागर हुए हैं जो सेना के लिए और भी खतरनाक हैं।

भ्रष्टाचार की संस्कृति

थलसेना के प्रमुख जनरल वी के सिंह ने अपना दायित्व संभालने से पहले ही सुकना जमीन घोटाले में लिप्त पाए गए जनरलों के खिलाफ कार्रवाई की थी। अपनी नई जिम्मेदारी के बाद उन्होंने यह स्पष्ट संदेश दिया था कि किसी भी सूरत में वे भ्रष्ट अधिकारियों को नहीं बख्शेंगे। लेकिन ऐसा करते हुए उन्हें इक्का-दुक्का मामलों से ऊपर उठकर यह देखना होगा कि किस तरह सेना में सिर उठा रही भ्रष्टाचार की संस्कृति को नेस्तनाबूद किया जाए। आधुनिक हथियारों की जरूरत से कोई इनकार नहीं कर सकता लेकिन मौजूदा सेना प्रमुख के सामने नए साल में सबसे बड़ी चुनौती यही होगी कि वे भ्रष्टाचार और अनैतिक हरकतों पर काबू पाने के लिए सेना में संगठन के स्तर पर किस तरह के सुधार लाएँ।

फागुन रंग झमकते हों तब देख बहारें होली की

—राममोहक पाठक

होली रंगों की आराधना का पर्व है। प्रकृति जब रंगों की छटा विविध रूपों में बिखेरती है तब होली का रंग पर्व अपनी निराली छटा के साथ भारतीय जन-जीवन में अवतरित होता है। बसंत में टेसू फूलते हैं। आम भी बौराते हैं। पपीहे की पीव-पीव ध्वनि होली के आने का संकेत देती है। पीली सरसों, टेसू, चैती गुलाब, चंपा-चमेली, कचनार की कली, भाँग, बूटी, कालिंदी तट का महारास और कवि जयदेव की कृति 'गीत गोविन्द' के कृष्ण नाम के रंग, सूरदास की काली कमली और कबीर की 'जस की तस' धरी गई चदरिया का ही नहीं, न जाने कितने अनगिनत रंग होली पर मनुष्य को सराबोर कर देते हैं। रंग हँसाते हैं, रुलाते हैं, कुछ कहते हैं, सुनते हैं, गुनगुनाते हैं। कभी सुनी है आपने रंगों की स्वर लहरी?

चूहे की प्रतिक्रिया

जीवन पर रंगों के महत्त्वपूर्ण प्रभाव को विज्ञान ने भी स्वीकार किया है। ग्रहों के कुप्रभाव से बचने या अभीष्ट सिद्धि के लिए रंगों के योग को जहाँ ज्योतिष मान्यता देता है, वहीं विज्ञान शरीर, मस्तिष्क और संवेदनशीलता पर इनके प्रभाव को स्वीकार करता है। पीले, सफेद, जोगिया, लाल और हरे रंगों के प्रभाव के संबंध में एक रूसी वैज्ञानिक द्वारा चूहों पर किए गये प्रयोगों का जो विवरण पढ़ने को मिला, वह रंगों की सत्ता को प्रतिपादित करता है।

लाल रंग का पानी पीकर चूहा गुराँने लगा। जोगिया रंग का पानी पीने वाला चूहा शांत हो गया। पीली बोतल का पानी पीकर चूहा शारीरिक उत्तेजना से व्याकुल हो उठा। हरे रंग का पानी पीने वाला चूहा दूसरों की अपेक्षा चंचल दिखा। सफेद रंग का पानी पीने वाला चूहा अत्यंत शांत भाव से रहने लगा। योग शब्द से बने, प्रचलित शब्द 'जोगिया' का अर्थ है, वह रंग जो सांसारिकता से विमुख कर अध्यात्म की ओर उन्मुख करे। लाल रंग भोग-वासना का प्रतीक माना गया है। मान्यताओं के

अनुसार क्रोध का रंग भी लाल ही है। पूरा विश्व सफेद रंग को शांति का रंग मानता है। पीला रसिक भाव की उत्तेजना का रंग माना गया है।

पानी का रंग

वैज्ञानिक आज दूसरे ग्रहों पर जा रहे हैं। इन ग्रहों के अध्ययन से भी उनके विशिष्ट रंगों का पता चलता है। ज्योतिष शास्त्र में ग्रहों के अलग-अलग रंग बताए गए हैं। मंगल का रंग लाल, सूर्य का गुलाबी और हल्का पीला, गुरु का सफेद, बुध का हरा और शनि का रंग कुछ कालिमा लिए हुए गहरा नीला है।

रंगों की सार्थकता सिद्ध है। कभी हमारे एक शिक्षक ने माध्यमिक कक्षाओं में खूब छकाया था। उन्होंने पूछा-पानी का रंग क्या है? चुहलबाजी-सी करते हुए उन्होंने दोहराया-गंगा के किनारे रहते हो और पानी का रंग नहीं बता सकते? मुझे आज लगता है कि शायद वे भी पानी के रंग से अपरिचित थे। अपनी झेंप मिटाने के लिए मेरी खिंचाई कर रहे थे। उत्तर देर-सवेर मिल ही गया-पानी निरंग है। पर इस प्रश्न के फिल्मी उत्तर पर नजर डालिए, 'पानी रे पानी तेरा रंग कैसा, जिसमें मिला दो लगे उस जैसा।' सचमुच होली के मौके पर निरंग पानी भी रंगीन हो उठता है। होली पर जंगलों में टेसू भी खिलखिला उठते हैं। टेसू, जो डाल में टंगे-टंगे मुरझा जायेंगे या जमीन पर गिरकर नष्ट हो जाएंगे। इस रंग-महापर्व पर इनका यह समर्पण देखते बनता है। आज शहरों में टेसू की पूछ कहाँ? कीचड़, गुब्बारों से भरा पानी, वारनिश और पेंट की होली खेलने वाले क्या जाने टेसू का दर्द। शायद इसलिए शहरों में अब टेसू दुर्लभ हैं वे निष्कासित रहेंगे। वन प्रांत में ही सही, वहीं अपना रंग बिखेरेंगे। कैसे बदलता जा रहा है सब कुछ। कुछ तो पिचकारियाँ वर्षों से सूखी पड़ी हैं, और कुछ में रंग नहीं, सिर्फ पानी है। बचपन में पिचकारियाँ भरते, रंग छोड़ते थके नन्हें हाथों की याद क्या इन्हें नहीं सताती होगी? इनसे तो रंगों की जीवंत धार फूटती थी जो साल भर के लिए जीवन को जीवंतता प्रदान करती थी। यह

हर पिचकारी के लिए रंगों का वरदान माँगने का पर्व है। महानगरीय संस्कृति की छाप ऐसी कि सर्वत्र बनावटीपन दिखाई पड़ने लगा है। शहर से लल्लू होली पर घर लौटा है पर गाँववालों के साथ होली नहीं खेलेगा। क्या यही नियति है रंगों की? होली आसुरी प्रवृत्तियों के जल जाने का पर्व भी है। होलिका को अहंकार, असत्य और बुराई का प्रतीक मानकर इसे हम साल-दर-साल जलाते हैं। विभिन्न पुराणों और महाभारत में भक्त प्रह्लाद की प्रेरक कथा होलिका यानी होली से जुड़ी है। प्रह्लाद के पिता 'राक्षस' हिरण्यकश्यप ने अपने पुत्र को भगवान की भक्ति का दंड दिया। लकड़ी की चिता में आग लगाकर प्रह्लाद को जलाने की सजा दी गई। दुंडा नाम की राक्षसी को यह सिद्धि प्राप्त थी कि वह जिसको लेकर आग में बैठेगी वह जल जाएगा किंतु राक्षसी न जलेगी। प्रह्लाद को जलाने के लिए उसे बुलाया गया। वह प्रह्लाद को गोद में लेकर चिता में बैठी। चिता में आग लगाई गई। प्रह्लाद बच गए लेकिन दुंडा जल मरी।

जीएं लाख बरीस

अपनी सिद्धि के बल पर दुंडा ने अबोध बच्चों को जला दिया था। बाल-समाज उससे भयभीत था। दुंडा के नष्ट होते ही बाल समाज झूम उठा। सभी लोगों ने उस दिन अग्नि की पूजा की और उसकी चिता की भस्म लगाई। तब से नारा चल पड़ा। 'होलिका चन माई दें आशीष, बच्चे जीएं लाख बरीस'। होली पर्व धूलिवंदन का पर्व है। दुंडा राक्षसी के अंत का दिन भारतीय संवत्सर मास और वर्ष के अनुसार फाल्गुन पूर्णिमा का दिन था। तभी से उस दिन को कई स्थानों पर 'दुंदेरी' या 'दुंदारी' या होलिकादहन पर्व के रूप में मनाते हैं। होलिका या होली की पृष्ठभूमि में सामाजिक, आध्यात्मिक और धार्मिक तीनों ही तत्त्व महत्त्वपूर्ण हैं। रंगों का अर्थबोध बहुत व्यापक हैं। इंद्रधनुष के सात रंगों 'विबग्योर' या मौलिक चार रंगों- मैजेंटा, पीला, नीला, तथा काला में ही सभी रंग परिभाषित नहीं हो सकते। होली के रंग तो इन परिभाषाओं से कहीं अलग जीवन के बहुविध रंग हैं।

MOKSHA IS TO PRIORITY

-Piya Mukherjee

How often have we faced dilemmas when confronted with conflicting choices? We may choose one thing over another, but, later, we wonder if our priorities in life are appropriate. The Kathopanishad gives us some useful advice on this subject. One of the key tenets of the Kathopanishad is the concept of Shreyas and Preyas, explained by Yama to the young Nachiketa. This concept then helps clarify priorities in life and helps to resolve the seemingly tough dilemmas that we experience.

Conscious Choice

All activities can be categorised under Dharma (ethically done actions and duties as set by nature or circumstances), Artha (actions for material well-being, Kama (pursuit of desires) and Moksha (liberation). Preyas stands for the first three kinds of pursuits or the ones centring around Dharma, Artha and Kama, pursuing these initially seems to bring happiness, and yet a sense of completion remains elusive. The final 'jigsaw puzzle piece' continues to remain missing. For example, the pursuit of worldly pleasures and achievements initially bring in an adrenaline-high, but later leaves people bewildered or bitter leaving us wondering if the concept of happiness is a mirage. It is then that the seeker usually 'wakes up' to realise that the pursuit of Moksha—Sreyas—is the final and most significant part of life's apparent puzzle.

Consciously choosing the path of Moksha means that we acknowledge that the ultimate purpose of human life is Moksha. With this clarity, we proceed to pick and choose our activities in the Dharma-arth-kama realm, according to our circumstances, knowing these to be an important part of the bigger picture but limited in their ability to bring lasting joy. We become fully aware that these duties serve a specific purpose and are integral milestones in our life's journey.

However, now, we no longer seek in them what they are inherently incapable of giving. So we no longer whirl in the 'mad carousel' of life' dashing from activity, chasing one person or another, piling up material wealth (and facebook 'like') trying to look for that last 'factor' that will make our life complete. Free from the ignorance-driven chase of this mirage, we finally ask an existential question, "How do I make my human life useful?"

This finally puts the big picture of our life's purpose in perspective and we begin aligning ourselves to that which allows us to treat Dharma-Artha-Kama as allies, not masters.

Actions under Dharma, Artha and Kama appear in our lives like pieces of a jigsaw puzzle—a leaf here, a cloud there, a house here and a road there; however without the bigger picture of awareness, we flounder. We fix a piece here or there, sometimes prioritising between our health, wealth, relationships and achievement. Once the pursuit of Moksha is consciously chosen, the very same pieces of the jigsaw puzzle begin to make more sense. Guided by the bigger picture, we fit each piece into its rightful slot. Then, the little dilemmas and senseless problems and pains begin to vanish.

And we marvel at the wonder of human life and the enormous potential that it brings into our existence.

यो नः पिता जनिता यो विधाता धामनि वेद भुवनानि विश्वा।
यो देवानां नामधा एक एव तं सम्प्रश्नं भुवना यन्त्यन्या

॥यजु.17/27॥

ऋषि-भुवनपुत्रो विश्वकर्मा, देवता-विश्वकर्मा, छिन्द-निचृदार्षी त्रिष्टुप्
हे मनुष्यो! जो हमारा पालन करने वाला (पिता), उत्पन्न करने
वाला (जनिता), कर्मफल विधाता है, जो सब लोक-लोकान्तरों की
स्थिति को यथावत् जानता है। जो (देवानां) दिव्य सूर्य आदि देवों,
इंद्रियों और विद्वानों का नाम व्यवस्थादि करने वाला एकमात्र वही
है। वही हमारा स्वामी और पिता है। उस (संप्रश्नं) जानने योग्य
परमात्मा देव को अन्य सब (भुवना) उत्पन्न प्राणी प्राप्त हो रहे हैं।
उससे ही धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के फलों की सिद्धि होती है।

Oh you devotee, He is our Father i.e., He who always protects
us. He is our Creator. He is our Dispencer. He who knows all
the spheres of existence and also their positions and places.
He who is the Assignor of the names of the celestial bodies.
He is One without a second; All other beings proceed to en-
quire about Him fully.